साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 11, अंक : 2 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 13 अगस्त 2025 से 19 अगस्त 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

धराली त्रासदी- कितनी खतरनाक है हर्षिल में बनी कृत्रिम झील ?

उत्तरकाशी। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में खीरगंगा (खीर गाड़) में आई अचानक बाढ़ की वजह से धराली कस्बे का नक्शा तो बदल ही गया है, बल्कि हर्षिल पर भी एक खतरा मंडरा रहा है। 5 अगस्त को सिर्फ खीर गंगा में ही उफान नहीं आया था, हर्षिल में तेलू गाड़ भी उफन गया था और इससे आर्मी कैंप को नुकसान पहुंचा था।

इस वजह से भूस्खलन से भागीरथी नदी में एक झील भी बन गई थी, जो अब चिंता का सबब बनी हुई है। हालांकि उत्तराखंड के सिंचाई विभाग का कहना है कि इस झील से खतरा नहीं है, क्योंकि पानी का रिसाव लगातार हो रहा है। हर्षिल तक सड़क मार्ग से पहुंच न होने के चलते अभी इस झील के मुहाने को हाथ से (मैन्युअल) खोलने की कोशिश की जा रही है। धराली त्रासदी के छह दिन बाद प्रशासन ने पहली बार इस आपदा में लापता हुए लोगों के बारे में जानकारी दी। गढ़वाल आयुक्त गढवाल विनय शंकर पांडे ने उत्तरकाशी के आपदा नियंत्रण कक्ष में पत्रकार वार्ता में बताया कि अभी तक इस आपदा में 43 लोगों के लापता होने की सूचना थी, जिनमें से धराली गांव के एक युवक आकाश पंवार का शव बरामद हुआ है। मृत युवक के परिजनों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा चुकी है। शेष लापता 42 लोगों में 9 सेना के कर्मचारियों के साथ ही धराली गांव के 8 तथा निकटवर्ती क्षेत्रों के 5 लोग शामिल हैं। टिहरी जिले का एक, बिहार के 13 और उत्तर प्रदेश के छह व्यक्ति भी लापता बताए गए हैं।

गढ़वाल आयुक्त ने बताया कि इनके अतिरिक्त 29 नेपाली मजदूरों के लापता होने की भी सूचना मिली थी हालांकि मोबाइल नेटवर्क बहाल होने के बाद इनमें से पांच व्यक्तियों से संपर्क हो गया। बाकी 24 मजदूरों के संबंध में उनके ठेकेदारों से ज़्यादा जानकारी नहीं मिली। माना जा रहा है कि अभी तक सकुशल मिले पाँच मजदूरों की तरह शेष अन्य मजदूर भी कहीं और जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि केदारनाथ आपदा के दौरान भी लापता बताए गए कई लोग प्रभावित क्षेत्र से वापस अपने घर पहुंच चुके थे। अन्य राज्यों के लापता लोगों के घरों का पता जुटाकर भी उनकी खोज-खबर का प्रयास किया जा रहा है। इन लोगों के बारे में अंतिम वस्तुस्थिति एक-दो दिन में साफ होने की उम्मीद है। विनय शंकर पांडे ने बताया कि आपदा प्रभावित क्षेत्र ले 1278 लोगों को सुरक्षित निकाला जा चुका है। मलबे के भीतर दबे लोगों की खोज करने के लिए एनडीआरएफ की टीम सहित अलग से एक विशेष अधिकारी मौके पर तैनात किए गए हैं। एसडीआरएफ के आईजी भी मौके पर कैम्प कर रहे हैं। देहरादून से 10 विशेषज्ञ भूवैज्ञानिकों की एक विशेष टीम भी भेजी गई है। मंडलायुक्त के अनुसार धराली गांव के आपदा प्रभावितों को तत्कालिक तौर पर पांच लाख रुपए की अनुग्रह राशि का वितरण शुरू किया जा चुका है। प्रभावित लोगों को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न, कपड़े व दैनिक उपयोग की सामग्री उपलब्ध कराई गई है। प्रभावितों के राहत और पुनर्वास पर सलाह देने के लिए राजस्व सचिव की अध्यक्षता में तीन सदस्यों की एक उच्चस्तरीय समिति बनाई गई है। मंडलायुक्त ने बताया कि हर्षिल में भागरथी नदी पर बनी झील से पानी निकासी के लिए सिंचाई विभाग और उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड ने रविवार से ही काम शुरू कर दिया गया था। देहरादून में सिंचाई विभाग के मुख्य अभियंता सुभाष चंद्र ने डाउन टू अर्थ को बताया कि भागीरथी नदी में मलबा आने से यह झील 5 तारीख को ही बन गई थी। उन्होंने 7 तारीख को इस झील का मुआयना भी किया था। तब उम्मीद की जा रही थी कि सड़क मार्ग दुरुस्त हो जाने पर मशीनों से इस झील को खोला जा सकेगा लेकिन फिर इसे हाथ से (मैनुअली) खोलने की कोशिश करने का फैसला किया गया। हेलिकॉप्टर से 20 मजदूरों, दो सहायक अभियंताओं और पांच कनिष्ठ अभियंताओं को वहां भेजा गया है। वह उम्मीद जताते हैं कि लिंचागाड़ में बेली ब्रिज तैयार होने के बाद अब उससे आगे सड़क निर्माण भी दो-एक दिन में हो जाएगा और फिर चार पोकलैंड मशीनों इस झील तक पहुंच जाएंगी। तब उनसे मलबा हटा दिया जाएगा और इस झील को पंक्चर कर इसका पानी सुरक्षित तरीके से निकाल दिया जाएगा। मीडिया में इस झील से हर्षिल को खतरा होने की अटकलों को सुभाष चंद्र खारिज करते हैं। वह कहते हैं कि यह ठीक है कि नदी की चौड़ाई का 90 फ़ीसदी पानी मलबा आने से अवरुद्ध हो गया है लेकिन झील के दाईं ओर से दस फ़ीसदी पानी का रिसाव (ओवरफ़्लो) लगातार हो रहा है। झील का स्तर लगभग वही है जो पांच तारीख की शाम को था। इसके लगातार बड़े होने की बात सही नहीं है। यह झील 1.3 किलोमीटर लंबी और करीब 75-80 मीटर चौड़ी है। वह कहते हैं कि मौके पर मौजूद उनकी टीम दाईं ओर से मैनुअली झील के मुहाने को चौड़ा करने की कोशिश कर रही है। अगर झील का पानी एक मीटर भी कम कर पाए तो बाईं ओर मौजूद सड़क से पानी निकल जाएगा। इसके बाद सड़क पर आए मलबे को हटाकर उसे इस्तेमाल लायक बनाया जा सकेगा। सुभाष चंद्र कहते हैं कि यह भी ध्यान रखा जा रहा है कि झील को खोलने की कोशिश कर रहे मज़दूरों की सुरक्षा सुनिश्चित हो। सभी सुरक्षा इंतज़ाम करने के बाद ही काम करने के निर्देश दिए गए हैं। राहत और बचाव कार्यों में लगे अमले के लिए मौसम विभाग से भी राहत की ख़बर है। मगंलवार को उत्तरकाशी में बारिश कम होने का अनुमान है। मौसम विज्ञान केंद्र देहरादून के प्रभारी इंचार्ज रोहित थपलियाल ने डाउन टू अर्थ को बताया कि सोमवार को भी ज़िले में हल्की से मध्यम और कहीं-कहीं भारी बारिश का अनुमान है। इस सवाल के जवाब में थपलियाल कहते हैं कि यह बताना अभी, मौजूदा संसाधनों के हिसाब से, संभव नहीं है। हालांकि वह कहते हैं कि मंगलवार सुबह के बाद मौसम में राहत मिलेगी। हालांकि यह राहत एक ही दिन की होगी। बुधवार से फिर ज़िले में बारिश का पूर्वानुमान है।

वैसे बता दें कि धराली में आपदा आने वाले हफ़्ते में उत्तरकाशी में मौसम सामान्य ही दर्ज किया गया है। मौसम विभाग के आंकड़े बताते हैं कि 30 जुलाई से 6 अगस्त के हफ़्ते में उत्तरकाशी में होने वाली सामान्य बारिश 104.4 मिलीमीटर होती है और इस दौरान वास्तविक बारिश 104.1 मिलीमीटर ही दर्ज की गई। यानी कि खीर गंगा या खीर गाड़ अतिवृष्टि या (बादल फटने) की वजह से तो नहीं ही उफनाई थी। अटकलों से परे उसके असली कारण जानने के लिए अभी और अध्ययन की जरूरत है।

देश में हरित क्रांति के जनक वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथ

वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथ का पूरा नाम मनकोम्बु संबाशिवन स्वामीनाथ था। उनका जन्म 7 अगस्त 1925 को हुआ था। वह कृषि वैज्ञानिक के साथ ही पादप आनुवंशिकीविद भी थे। उनको 1972 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का महानिदेशक बनाया गया और भारत सरकार के सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। देश में हरित क्रांति की शुरुआत करने वाले महान कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को केंद्र सरकार ने भारत रत्न से सम्मानित किया गया वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथ ने देश को कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए बड़ा काम किया था। स्वामीनाथन ने गेहूं और चावल की ऐसी वेरायटी तैयार की थी जिससे न केवल पैदावार में इजाफा हुआ, बल्कि उनके प्रयासों से देश को सूखे से बचाने में भी मदद मिली। उनका विवाह मीना स्वामीनाथन से हुआ था, जिनसे उनकी मुलाकात 1951 में हुई थी जब वे दोनों कैम्ब्रिज में पढ़ रहे थे। वे चेन्नई, तमिलनाडु में रहते थे। उनकी तीन बेटियाँ सौम्या स्वामीनाथन (एक बाल रोग विशेषज्ञ), मधुरा स्वामीनाथन (एक अर्थशास्त्री), और नित्या स्वामीनाथन (लिंग और ग्रामीण विकास) हैं।गांधी और रमण महर्षि ने उनके जीवन को प्रभावित किया।अपने परिवार के स्वामित्व वाली 2000 एकड़ जमीन में से, उन्होंने एक तिहाई विनोबा भावे के कारण दान कर दी। 1960 के दशक में भारत समेत पड़ोसी देशों को अकाल की स्थिति से बचाने में उन्होंने महत्वपूर्ण काम किया था।बाद में 1979 में वह प्रधान सचिव बनाए गए थे। वह योजना आयोग में भी रहे। देश को सूखे से बचाने पर उन्होंने महत्वपूर्ण काम किया था।अपने करियर की शुरुआत सिविल सेवा से की, लेकिन उनकी रुचि कृषि में थी। इस वजह से उन्होंने इस क्षेत्र में रिसर्च करना शुरू कर दिया। यूरोप और अमेरिका के कई बड़े संस्थानों में उन्होंने अपने रिसर्च से महत्वपूर्ण खोजे कीं और उपलब्धियां हासिल कीं। 1954 में उन्होंने सेंट्रल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट) कटक में जैपोनिका किस्मों से इंडिका किस्मों में फर्टिलाइजर रिस्पांस के लिए जीन ट्रांसफार्मर करने पर बड़ा काम किया।उन्होंने इसे उच्च उपज देने वाली किस्मों को विकसित करने का पहला प्रयास बताया जो अच्छी मिट्टी की उर्वरता और अच्छे जल प्रबंधन का जवाब दे सकती हैं। इसकी आवश्यकता इसलिए थी क्योंकि आज़ादी के बाद भारतीय कृषि बहुत अधिक उत्पादक नहीं थी। वर्षों के औपनिवेशिक शासन ने इसके विकास को प्रभावित किया और देश के पास इस क्षेत्र को आधुनिक बनाने के लिए संसाधनों की कमी थी। हालत यह थी कि भोजन के लिए जरूरी फसलों को भी अमेरिका जैसे देशों से आयात करना पड़ता था। कृषि वैज्ञानिक मनकोम्बु सम्बाशिवन स्वामीनाथन, जिन्हें भारत में हरित क्रांति के जनक के रूप में जाना जाता है, ने 1960 के दशक के मध्य में कृषि उत्पादन में वृद्धि का काम किया। मेक्सिको में एमएपी की सफलता से प्रेरित होकर, उन्होंने बोरलॉग के साथ मिलकर नई मैक्सिकन गेहूँ की किस्में विकसित कीं। नए बीजों से लैस, स्वामीनाथन ने कठोर परीक्षणों के माध्यम से उनकी क्षमता का प्रदर्शन करके किसानों और भारत सरकार को उन्हें अपनाने के लिए राजी करने के मिशन की शुरुआत की। 1966 में भारत ने 18,000 टन नए मैक्सिकन गेहूँ के बीज आयात किए, जिससे भारत में, विशेष रूप से उत्तर-पश्चिमी राज्यों पंजाब और हरियाणा में, गेहूँ के उत्पादन में आमूल-चूल परिवर्तन आया। भारत में गेहूँ का उत्पादन 1965 के 1.2 करोड़ टन से बढ़कर 1970 में 2 करोड़ टन हो गया। उच्च उपज वाले चावल के बीजों की किस्मों के विकास के साथ भारत में चावल का उत्पादन भी बढ़ा। 1971 में भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया, और 1970 के दशक के अंत तक भारत दुनिया के सबसे बड़े कृषि उत्पादकों में से एक बन गया। प्रभाव मेक्सिको में एक प्रयोग के रूप में शुरू हुई इस क्रांति ने अंततः दुनिया भर में, विशेष रूप से ब्राज़ील, चीन, पाकिस्तान और फिलीपींस जैसे विकासशील देशों में, कृषि में क्रांति ला दी। हरित क्रांति ने कृषि का औद्योगिकीकरण किया। रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और सिंचाई की विशेषता वाली आधुनिक खेती ने खेती के पारंपरिक तरीकों का स्थान ले लिया। हालाँकि यह प्रगति अभूतपूर्व थी, लेकिन इसके परिणाम भी हुए। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर अत्यधिक निर्भरता के कारण प्रदूषण, मृदा क्षरण और जैव विविधता में कमी आई। बड़े पैमाने पर सिंचाई परियोजनाओं के परिणामस्वरूप भूजल स्तर में कमी आई है। गरीब किसान अक्सर उच्च उपज वाले बीज, उर्वरक और सिंचाई प्रणाली जैसे आधुनिक कृषि सामग्री नहीं खरीद पाते हैं, जिससे उनकी उपज कम हो जाती थी , हरित क्रांति सही दिशा में एक बदलाव है, लेकिन इसने दुनिया को स्वप्नलोक में नहीं बदल दिया है।

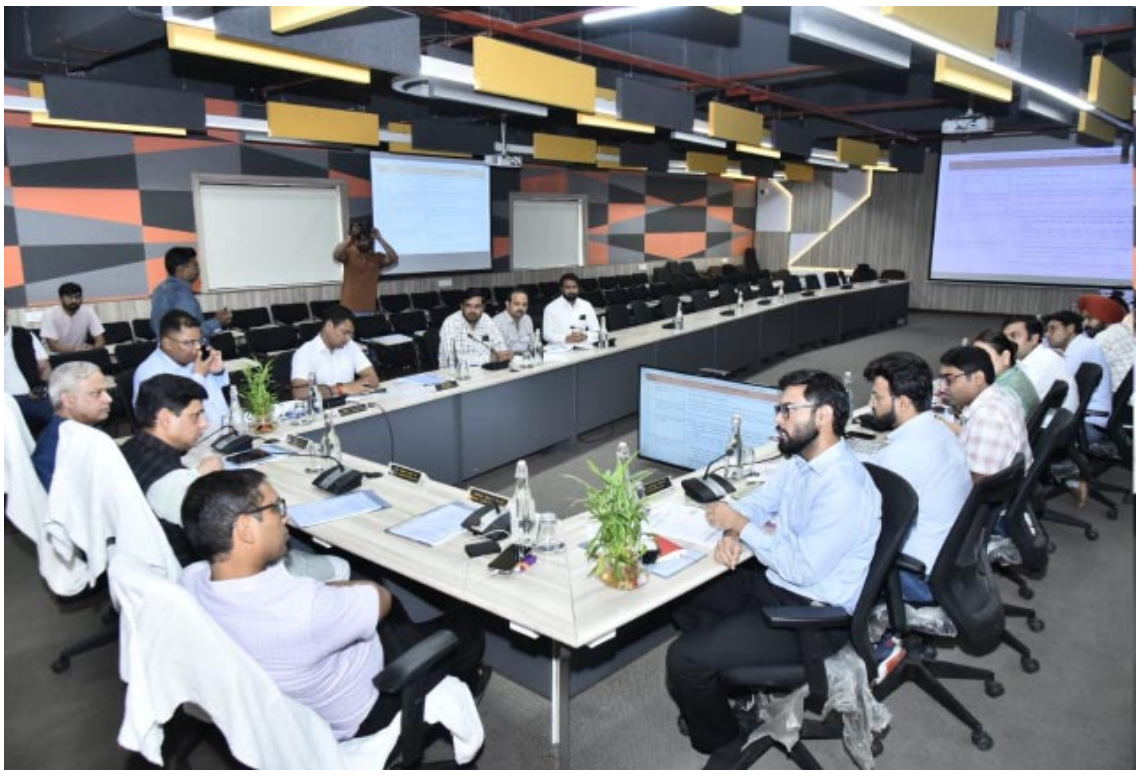

ग्रीन मोबिलिटी को बढ़ावा देने में प्रदेश में अग्रणी है एआईसीटीएसएल

इंदौर को 50 इलेक्ट्रिक बसों की जल्द मिलेगी सौगात

एआईसीटीएसएल इंदौर की कार्यकारिणी बोर्ड की बैठक सम्पन्न

इंदौर, अटल इंदौर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेस लिमिटेड, इंदौर की बोर्ड बैठक, बोर्ड अध्यक्ष एवं महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बताया गया कि ग्रीन मोबिलिटी को बढ़ावा देने के लिए इलेक्ट्रिक बसों की संख्या इसी माह से प्रारम्भ होगी। इंदौर शहर को 50 इलेक्ट्रिक बसों की सौगात मिलेगी। इन बसों के संचालन हेतु आई एस बी टी नायता मुंडला एवं देवास नाका दो इलेक्ट्रिक बस डिपो के निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। बैठक में एआईसीटीएसएल बोर्ड के उपाध्यक्ष एवं संभागायुक्त श्री दीपक सिंह, निदेशक एवं कलेक्टर श्री आशीष सिंह, प्रबंध निदेशक एवं निगमायुक्त श्री शिवम वर्मा, निदेशक एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी आई डी ए श्री रामप्रकाश अहिरवार तथा ए आई सी टी एस एल के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री दिव्यांक सिंह एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

जल्द ही इंदौर से उज्जैन, इंदौर से भोपाल, इंदौर से खरगोन, इंदौर से सेंधवा, इंदौर से खंडवा, इंदौर से बुरहानपुर, इंदौर से रतलाम, इंदौर से धार - मांडव, इंदौर से महेश्वर सर्वसुविधायुक्त इलेक्ट्रिक बसों का संचालन प्रारंभ होगा। इस हेतु निविदा प्रक्रिया पूर्ण की जा चुकी है। इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को बढ़ावा दिए जाने हेतु आगामी आने वाली बसों हेतु ऑपर्च्युनिटी चार्जिंग स्टेशन का निर्माण पी पी पी मॉडल पर किया जाएगा। नए इंटरसिटी मार्गों पर ए सी लग्जरी बसों का संचालन किया जाएगा। यात्रियों की मांग के आधार पर पूर्व में की गई निविदा प्रक्रिया पूर्ण होने से जल्द ही इंदौर से कोटा, इंदौर से मंदसौर होकर नीमच, इंदौर से जीरापुर, इंदौर से सोयत कला हेतु ए सी बसों का संचालन प्रारंभ होगा। इंदौर से राजकोट (वाया सूरत), इंदौर से रायपुर (वाया नागपुर), इंदौर से जयपुर, इंदौर से ग्वालियर, इंदौर से कानपुर (वाया झांसी), इंदौर से अहमदाबाद, इंदौर से उदयपुर, इंदौर से पुणे, इंदौर से मुंबई, इंदौर से अयोध्या, इंदौर से वाराणसी, इंदौर से नई दिल्ली, इंदौर से दमोह, इंदौर से बांसवाड़ा, इंदौर से भूसावल, इंदौर से शहडोल मार्गों पर पुनः निविदा आमंत्रित की जाएगी। इंदौर से भोपाल के मध्य हेलीकॉप्टर सुविधा प्रारंभ किए जाने हेतु एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट (श्वह्द्व) मंगाएं जायेंगे। लास्ट माइल कनेक्टिविटी को और बेहतर बनाने हेतु भविष्य में शहर में ई बाइक के संचालन के विषय में चर्चा की गई। वर्तमान में इस हेतु माय बाइक प्रोजेक्ट के अंतर्गत 1500 साइकिलों का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। बैठक में बताया गया कि एआईसीटीएसएल को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने हेतु विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में ए बी रोड पर स्थापित 42 यूनीपोल पर विज्ञापन हेतु निविदा आमंत्रित की गई है। जल्द ही डिपो पर यूनीपोल लगाए जाने एवं उस पर विज्ञापन हेतु निविदा प्रक्रिया की जाएगी। महापौर द्वारा रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में शहर में संचालित सभी बसों में महिला यात्रियों हेतु निःशुल्क यात्रा की घोषणा भी की। इसके साथ ही बैठक में बस संचालन संबंधी विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई।

मध्यप्रदेश शिखर खेल अलंकरण एवं 38वें नेशनल गेम्स के पदक विजेता हुए सम्मानित

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि खिलाड़ी वो है, जो जीवन में उच्चतम मापदंड स्थापित करें। अपने पराक्रम और साहस से खेल के साथ जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफल हो। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण भी इस नाते उत्कृष्ट खिलाड़ी थे। उनका जीवन खिलाड़ियों सहित हम सभी के लिए प्रेरक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को रवीन्द्र भवन में मध्यप्रदेश शिखर खेल अलंकरण और 38वें नेशनल गेम्स-2025 के पदक विजेताओं के सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार खेलों के प्रोत्साहन के लिए प्रतिबद्ध है। खिलाड़ियों को सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। मध्यप्रदेश खेल के क्षेत्र में निरंतर उपलब्धियां प्राप्त कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश शिखर खेल अलंकरण एवं 38वें नेशनल गेम्स 2025 के पदक विजेता खिलाड़ियों का सम्मान समारोह में सम्मान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सम्मानित और पुरस्कृत खिलाड़ियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके साथ समूह चित्र भी निकलवाया। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि प्रदेश के युवा खिलाड़ियों ने पूरे देश ही नहीं बल्कि विश्व में प्रदेश का नाम रौशन किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रदेश के खिलाड़ी अगले नेशनल गेम्स में और अच्छा प्रदर्शन कर मध्यप्रदेश को प्रथम स्थान पर लायेंगे। श्री सारंग ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव की खिलाड़ियों के प्रति सजगता है कि उन्होंने हर विधानसभा में एक खेल स्टेडियम बनाने की पहल की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को समारोह में नेशनल गेम्स में प्रदेश को मिली ट्राफी भेंट की गई। समारोह में ओलंपिक संघ के अध्यक्ष श्री रमेश मेंदोला, सचिव श्री दिग्विजय सिंह, प्रमुख सचिव श्री मनीष सिंह और उप सचिव श्री अजय श्रीवास्तव उपस्थित थे। संचालक खेल एवं युवा कल्याण श्री राकेश गुप्ता ने स्वागत भाषण दिया। संयुक्त संचालक श्री बी.एल. यादव ने आभार माना। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विक्रम पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया। सम्मान स्वरूप प्रत्येक खिलाड़ी को 2-2 लाख रूपये की राशि के चेक दिये गये। शूटिंग खिलाड़ी ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर खरगौन, क्याकिंग-कैनोइंग (स्लॉलम) खिलाड़ी जान्हवी श्रीवास्तव भोपाल, तीरंदाजी खिलाड़ी रागिनी मार्को जबलपुर, कुश्ती खिलाड़ी शिवानी पवार छिंदवाड़ा, बॉक्सिंग खिलाड़ी श्रुति यादव भोपाल, जूडो खिलाड़ी यामिनी मौर्य सागर, खोखो खिलाड़ी सचिन भार्गो देवास, हॉकी खिलाड़ी नीलू डाडिया मंदसौर, सॉफ्टबाल खिलाड़ी प्रवीण कुमार दवे इंदौर, शूटिंग (दिव्यांग श्रेणी) रूबिना फ्रांसिस जबलपुर और पावरलिफ्टिंग खिलाड़ी अपूर्व दुबे इंदौर को विक्रम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एकलव्य पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों को सम्मानित किया। सम्मान स्वरूप प्रत्येक खिलाड़ी को एक-एक लाख रूपये की राशि के चेक दिये गये। समारोह में शूटिंग खिलाड़ी रितुराज बुंदेला टीकमगढ़, क्याकिंग-कैनोइंग (स्लॉलम) खिलाड़ी भूमि बघेल महेश्वर, स्क्वैश खिलाड़ी कृष्णा मिश्रा इंदौर, फेंसिंग खिलाड़ी पूजा दांगी राजगढ़, रोइंग खिलाड़ी प्रभाकर सिंह राजावत ग्वालियर, सेलिंग खिलाड़ी नेहा ठाकुर देवास, तैराकी खिलाड़ी प्रखर जोशी इंदौर, एथलेटिक्स खिलाड़ी अर्जुन वास्कले खरगौन, कुश्ती खिलाड़ी प्रियांशी प्रजापत उज्जैन, हॉकी खिलाड़ी अंकित पाल ग्वालियर और पावरलिफ्टिंग खिलाड़ी गौरव पचौरी मुरैना को एकल०?य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्वामित्र पुरस्कार प्राप्त प्रशिक्षकों को सम्मानित किया। सम्मान स्वरूप प्रत्येक प्रशिक्षक को 2-2 लाख रूपये की राशि के चेक दिये गये। सम्मान समारोह में क्याकिंग-कैनोइंग प्रशिक्षक श्री पीजूष कांती बारोई भोपाल, तीरंदाजी प्रशिक्षक श्री अशोक कुमार यादव जबलपुर और हॉकी प्रशिक्षक श्री लोकेन्द्र शर्मा भोपाल को विश्वामित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिम्नास्टिक के श्री रतनलाल वर्मा उज्जैन को लाइफटाइम एचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित कर 2 लाख रूपये का चेक भी प्रदान किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सम्मान समारोह में 38वें नेशनल गेम्स 2025 के 34 स्वर्ण पदक विजेता, 25 रजत और 23 कास्य पदक विजेता को भी सम्मानित किया। कुल 18 खेलों के 82 पदक विजेताओं को सम्मान स्वरूप कुल 5 करोड़ 46 लाख की राशि दी गई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में खिलाड़ी और खेलप्रेमी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पीएम मित्रा पार्क के भूमिपूजन कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की

इंदौर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 25 अगस्त को मध्यप्रदेश आएंगे और धार जिले के बदनावर क्षेत्र में बनने वाले देश के पहले पीएम मित्रा पार्क का भूमिपूजन कर प्रदेश को विकास की एक और सौगात देंगे। उन्होंने कहा कि जहां देश के दूसरे राज्य पीएम मित्रा पार्क के लिए प्रारंभिक तैयारियां ही कर रहे हैं, वहीं मप्र में 25 अगस्त को इसका भूमिपूजन भी सम्पन्न होने जा रहा है। इस सौगात के लिए हमने केंद्र सरकार से निरन्तर समन्वय किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क का निर्माण पूरा होने पर सम्पूर्ण मालवा क्षेत्र के विकास को नए पंख लगेंगे। धार जिले का यह क्षेत्र पीथमपुर की तरह अब दूसरा वृहद औद्योगिक केंद्र (इन्डस्ट्रियल हब) बनने जा रहा है। इस पार्क की स्थापना से पूरे मालवा क्षेत्र के कपास उत्पादक किसानों को लाभ मिलेगा और करीब 3 लाख लोगों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से स्थाई रोजगार मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि धार जिले का बदनावर क्षेत्र इंदौर मेट्रोपॉलिटन सिटी एरिया का हिस्सा भी बनेगा। इससे इस क्षेत्र को मेट्रोपॉलिटन एरिया की सुविधाओं का लाभ भी मिलेगा। यहां अपना उद्योग स्थापित करने वाले सभी निवेशकों, उद्योग समूहों और कम्पनियों को फोर लेन रोड, रेल और एयर कनेक्टिविटी सुविधा भी उपलब्ध कराई जायेगी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार रात्रि को वीडियो कॉफ्रेंसिंग के जरिए कमिश्नर इंदौर और कलेक्टर धार से प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा पीएम मित्रा पार्क के भूमिपूजन कार्यक्रम के लिए धार आगमन एवं जनसभा से जुड़ी सभी तैयारियों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के लिए विशेष प्रबंध किए जाएं। पीएम मित्रा पार्क का निर्माण इस क्षेत्र के किसानों और श्रमिकों की जिंदगी बदलने का अवसर है। कार्यक्रम में क्षेत्रीय किसानों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए। विभिन्न जिलों से कार्यक्रम में आने वाले प्रतिभागियों को बिना किसी बाधा के सभा स्थल तक पहुंचाने के लिए व्यापक प्रबंध किए जाएं।

जलवायु संकट- प्राचीन अंटार्कटिक द्वीप के एक चौथाई ग्लेशियर पिघल गए

मुंबई। एक नए शोध में कहा गया है कि दुनिया के अंतिम प्राचीन पारिस्थितिक तंत्रों में से एक, अंटार्कटिक द्वीप के लगभग एक चौथाई ग्लेशियर जलवायु परिवर्तन के कारण पिघल गए हैं। इस खोज ने वैज्ञानिकों को जलवायु पर कार्रवाई करने का आह्वान करने पर मजबूर कर दिया है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी देते हुए कहा है कि इसका दक्षिण-पश्चिम में स्थित उप-अंटार्कटिक द्वीप व हर्ड द्वीप की जैव विविधता पर विनाशकारी प्रभाव पड़ सकता है। हर्ड द्वीप अंटार्कटिका से लगभग 1,700 किलोमीटर उत्तर में स्थित एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। मोनाश विश्वविद्यालय की अगुवाई में किए गए शोध में पाया गया कि 1947 से अब तक लगभग 64 वर्ग किलोमीटर या 23.1 फीसदी बर्फीला हिस्सा नष्ट हो चुका है। शोध में कहा गया है कि इस दूरस्थ वातावरण का अध्ययन इस बारे में बहुत कुछ बता सकता है कि जलवायु परिवर्तन के कारण हमारे ग्रह के बाकी हिस्से कैसे प्रभावित हो रहे हैं।

हालांकि हर्ड द्वीप पृथ्वी पर सबसे दूर वाली जगह है, फिर भी इसे जलवायु में बदलाव के गंभीर परिणाम भुगतने पड़े हैं, इसके पीछे का कारण निश्चित रूप से 20वीं और 21वीं सदी में बढ़ते ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन है। दक्षिणी महासागर में इस द्वीप का स्थान इसे वैश्विक जलवायु प्रणाली का एक अहम हिस्सा और ग्रह के स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण संकेतक बनाता है, इसलिए जो बदलाव दिखाई दे रहे हैं, वे वास्तव में एक स्पष्ट और चिंताजनक तस्वीर पेश करते हैं। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि दुर्गम भू-भाग तक पहुंचने और उसे पार करने की चुनौतियों के कारण हर्ड द्वीप के अधिकतर इलाकों का अध्ययन कम ही किया जा सका है, इसलिए हमने द्वीप का अध्ययन करने के लिए 1947 के स्थलाकृतिक मानचित्रों और ऐतिहासिक एवं वर्तमान पृथ्वी अवलोकन प्लेटफार्मों से प्राप्त उपग्रह चित्रों का उपयोग किया। कुल मिलाकर ग्लेशियरों की सूची में 29 ग्लेशियरों को सूचीबद्ध किया गया है, जिनमें 1947, 1988 और 2019 में उनके बारे में पता लगाया गया। इस इलाके की ढलान व ऊंचाई सहित प्रमुख विशेषताओं का भी दस्तावेजीकरण किया गया है, जिससे द्रव्यमान संतुलन, ग्लेशियर आयतन, सतही वेग और ज्वालामुखी व अन्य सतही मलबे के प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए आंकड़े उपलब्ध होते हैं। शोधकर्ताओं ने उम्मीद जताई है कि इस साल के अंत में ऑस्ट्रेलियाई अंटार्कटिक कार्यक्रम के साथ हर्ड द्वीप की एक नियोजित यात्रा के दौरान वे इस कार्य को आगे बढ़ाएंगे और यह अध्ययन करेंगे कि

ग्लेशियरों के पीछे हटने से पर्वतीय जैव विविधता को किस तरह का खतरा है। द क्रायोस्फीयर पत्रिका में प्रकाशित शोध में कहा गया है कि शोधकर्ता कंप्यूटर मॉडल का उपयोग करके यह अनुमान लगाएंगे कि द्वीप के ग्लेशियर ग्लोबल वार्मिंग पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। उन्होंने कहा कि हम दो संभावित भविष्यों की खोज करेंगे, एक जहां ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए कड़े कदम उठाए जाएंगे और दूसरा जहां बहुत कम काम किया जाएगा और उत्सर्जन सामान्य रूप से जारी रहेगा। हालांकि यह मानचित्रण ग्लेशियरों के पीछे हटने और आगे बर्फ के नुकसान को दर्शाता है, ये ग्लेशियर बने रहेंगे या उनमें से अधिकतर पूरी तरह से गायब हो जाएंगे, यह लोगों और शोधकर्ताओं के द्वारा अपनाए गए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पर निर्भर करता है। इसका मतलब एक ऐसे भविष्य के बीच का अंतर भी हो सकता है जहां जैव विविधता नष्ट हो जाती है, या एक ऐसा भविष्य जहां प्रमुख हिस्से सुरक्षित रहते हैं। हर्ड द्वीप 61 फीसदी बर्फ से ढका है और इसमें एक सक्रिय ज्वालामुखी, बिग बेन, व्याप्त है, जिसकी आधिकारिक ऊंचाई 2,745 मीटर है, हालांकि हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि इसकी ऊंचाई 2,800 मीटर से भी अधिक हो गई है।

मुंबई में कोर्ट ने कबूतरों को खाने के दाने डालने पर रोक. दुर्घटना में कबूतरों का क्या दोष. पुनः विचार करे.

इंदौर मुंबई में कोर्ट ने कबूतरों के 51.क्षेत्र में.दाने डालने पर रोक लगाई.कुछ लोगों का मानना है. कि कबूतरों की बीट और उनके पँखों से रोड़ पर दुर्घटना होती है.जब की पंक्षी ऊपर उड़ते है. वाहन रोड़ पर चलते है. और दुर्घटना का आरोप कबूतरों पर हों रहा है. लेकिन कुछ लोगों ने दाने डालने पर रोक का विरोध किया है. विरोध में जैन समाज के संतो और वरिष्ठ नेताओं ने कहा है. कि हमारा धर्म कहता है. जियो और जीने दो. कोर्ट के दाने पर रोक लगाने से सैकड़ो कबूतरों की मौत हों गई है. इस बात का ध्यान करते हुए. कोर्ट को अपने आदेश पर पुन: विचार करना चाहिए. पंक्षी. कबूतर. तोते. चिड़िया. कोयल. और अन्य पंक्षी किसी जाति. धर्म. के नहीं होते. और वे किसी के साथ भेदभाव भी नहीं करते. फिर उनके खाने का खर्च सरकार भी नहीं करती. फिर उनके खाने पर रोक क्यों लगा रही है कबूतरों की बीट और पखों के अलावा और दूसरे कचरे भी होते है कबूतरों.के खाने के लिए समाज सेवक. पंक्षी प्रेमी. उनके खाने का खर्चा करते है. कोर्ट को अपने निर्णय पर पुन: विचार करना चाहिए.जानकीलाल पटेरिया अध्यक्ष श्रम आस्था समिति इंदौर ने बताय की भरतीय संस्कृति में पंक्षीयों को पालने का चलन वर्षो से है. इस बात का भी ध्यान रखना होगा..

इंदौर के स्वच्छता मॉडल की देश में गुंज देख ने आई महाराष्ट्र सरकार की पर्यावरण मंत्री

कबीटखेडी स्थित एसटीपी, स्लज ट्रीटमेंट प्लांट, टेऊचिंग ग्राउण्ड स्थित बायो सीएनजी, सी एंड डी वेस्ट प्लांट का किया अवलोकन

इंदौर, देशभर में स्वच्छता के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले इंदौर नगर निगम के मॉडल को देखने आज महाराष्ट्र सरकार की पर्यावरण मंत्री पंकजा मुंडे जी इंदौर के दौरे पर आईं। इस अवसर पर महापौर पुष्यमित्र भार्गव एवं आयुक्त शिवम वर्मा द्वारा मंत्री जी का पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनंदन किया गया। इसके पश्चात होटल मेरियट में आयोजित कार्यक्रम में इंदौर नगर निगम द्वारा किए गए नवाचारों, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्रणाली एवं संपूर्ण स्वच्छता मॉडल पर विस्तृत प्रजेंटेशन के माध्यम से माननीय मंत्री जी को अवगत कराया गया। महापौर पुष्यमित्र भार्गव एवं आयुक्त शिवम वर्मा द्वारा इंदौर की स्वच्छता यात्रा, जीरो वेस्ट सिटी के प्रयास, प्लास्टिक वेस्ट प्रबंधन, सीएनडी वेस्ट प्रोसेसिंग, बायो सीएनजी उत्पादन, तथा जन भागीदारी से किए गए नवाचारों की संपूर्ण जानकारी दी गई। इसी क्रम में मंत्री सुश्री पंकजा मुंडे जी द्वारा कबीटखेड़ी स्थित 245 एमएलडी एसटीपी प्लांट, स्लज ट्रीटमेंट प्लांट, ट्रेंचिंग ग्राउंड स्थित बायो सीएनजी प्लांट, नेफ्रा प्लांट, सी एंड डी वेस्ट प्रोसेसिंग यूनिट तथा स्वच्छता परी का भी स्थलीय निरीक्षण एवं अवलोकन किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008